



EduInspire-An International E-Journal

An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)

Patron: Prof. R. G. Kothari

Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel

Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

वसुधैव कुटुम्बकम्: भारतीय दर्शन से अनुप्राणित जीवन-दृष्टि

डॉ. मुरलीधर मिश्रा

प्रोफेसर, शिक्षा संकाय वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सारांश

भारतीय संस्कृति का मूल दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम्" है—सम्पूर्ण पृथ्वी को परिवार मानना। यह विचार केवल दार्शनिक उक्ति नहीं, बल्कि वेद, उपनिषद्, महाकाव्य और नीति-ग्रंथों में बार-बार प्रतिपादित हुआ है। महा उपनिषद् का सूत्र संकीर्ण और उदार दृष्टि का अंतर स्पष्ट करता है। ईशावास्योपनिषद् और गीता समानता, करुणा और धर्मसार का संदेश देते हैं। महाभारत और नीति-ग्रंथ नैतिकता का मूल सूत्र बताते हैं। वेदों में पृथ्वी को माता कहा गया है, जो पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देता है। आधुनिक संदर्भ में यह दर्शन वैश्विक शांति, सहयोग, स्वास्थ्य संकट और मानवाधिकार की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है।

महत्वपूर्ण शब्दावली : वसुधैव कुटुम्बकम्, महा उपनिषद्, वेद, उपनिषद्, महाभारत, गीता, वैश्विक परिवार, अहिंसा, करुणा

विषय-प्रवेश : भारतीय दर्शन का मूल भाव व्यापकता और समावेशिता है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" केवल श्लोक नहीं, बल्कि जीवन दृष्टि है जो व्यक्ति, समाज और विश्व को जोड़ती है। महा उपनिषद्, उपनिषदों और गीता समानता, करुणा और धर्मसार का संदेश देते हैं। वेदों में पृथ्वी को माता और सभी जीवों को उसके पुत्र कहा गया है, जो पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देता है। महाभारत और नीति-ग्रंथ नैतिकता का सूत्र बताते हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु" विश्वकल्याण की कामना करते हैं। ऋग्वेद का मंत्र सामूहिकता और सहयोग का संदेश देता है।

साहित्यिक समीक्षण : यहाँ साहित्य समीक्षा का उद्देश्य "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा का सम्पूर्ण दर्शन स्पष्ट करने के लिए महा उपनिषद्, वेद, उपनिषद्, महाभारत, गीता, पुराण और नीति-ग्रंथों से उन सभी मूल ग्रंथों और श्लोकों को संकलन सह प्रस्तुतीकरण करना है जिनमें "वसुधैव कुटुम्बकम्" के भाव में समानता और करुणा, अहिंसा और मैत्रीभाव, धर्मसर्वस्व और नैतिकता, पृथ्वी माता और विश्व परिवार, सार्वभौमिक मंगलकामना की का सन्देश निर्दिष्ट है।

वेदों से उद्धरण : वैदिक साहित्य में सार्वभौमिक मंगलकामना, सौमनस्यकरण और समानता की कामना की गई है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥ ऋग्वेद (१.८९.१):

अर्थात् यह श्लोक सार्वभौमिक मंगलकामना का प्रतीक है। सभी के सुख, स्वास्थ्य और कल्याण की कामना ही "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सार है। यह श्लोक वैश्विक कल्याण का प्रतीक है। आधुनिक "वेलनेस" और "ग्लोबल हेल्थ" की अवधारणा इसी भाव से जुड़ती है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ॥ ऋग्वेद (१०.१९१.२) अर्थात् सब मिलकर चलो, मिलकर बोलो, और मिलकर सोचो। यह श्लोक सामाजिक एकता और सहयोग की नींव है। आधुनिक लोकतंत्र और सामूहिक निर्णय-प्रक्रिया इसी भाव से प्रेरित है।

समानी व आकृतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ऋग्वेद (१०.१११.३): अर्थात् विचार, हृदय और मन समान हों ताकि सब मिलकर आनंदपूर्वक रह सकें। यह सामूहिकता और एकता का संदेश देता है। जब विचार, हृदय और मन समान होते हैं, तब समाज में सहयोग, शांति और आनंद का वातावरण बनता है। विविधता में भी एकता संभव है, और यही “वसुधैव कुटुम्बकम्” की भावना को साकार करता है।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥ यजुर्वेद (३६.१८) अर्थात् मैं सभी प्राणियों को मित्रभाव से देखता हूँ। यह श्लोक हमें बताता है कि जीवन में सबसे श्रेष्ठ दृष्टि वह है जिसमें हम सभी जीवों को मित्र मानकर देखते हैं। सच्चा धर्म वही है जिसमें हम सभी प्राणियों को मित्रभाव से देखें। यही दृष्टि करुणा, अहिंसा और वैश्विक शांति का आधार है।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ॥ अथर्ववेद (११.६७.१) अर्थात् धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। यह श्लोक पृथ्वी और मानव के संबंध को अत्यंत आत्मीय और पारिवारिक रूप में प्रस्तुत करता है तथा सिखाता है कि पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं, इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम उसकी रक्षा करें, उसका सम्मान करें और उसे जीवनदायिनी रूप में स्वीकार करें।

एकं मित्रं सर्वे समीक्षन्ति ॥ अथर्ववेद (१२.१.३५) अर्थात् सभी जीव एक ही मित्र को देखते हैं — यह सार्वभौमिक मैत्री और एकता का भाव है। यह श्लोक सार्वभौमिक मैत्री और एकता का भाव प्रकट करता है तथा कहता है कि सभी जीवों का आधार और मित्र एक ही है। यही सार्वभौमिक मैत्री और एकता का भाव है, जो “वसुधैव कुटुम्बकम्” की आत्मा है।

सत्यं बृहदतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥ अथर्ववेद (१२.१.१) अर्थात् सत्य, ऋत, तप और यज्ञ पृथ्वी को धारण करते हैं। वह हमें अतीत और भविष्य की संगिनी बनकर व्यापक लोक प्रदान करे। यह श्लोक हमें सिखाता है कि पृथ्वी का आधार सत्य, ऋत, तप और यज्ञ हैं। यदि हम इन मूल्यों का पालन करें, तो पृथ्वी हमें अतीत और भविष्य दोनों में जीवन और समृद्धि प्रदान करेगी।

“मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे” (यजुर्वेद ३६.१८) अर्थात् “मैं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूँ।” यह मंत्र हमें सिखाता है कि जीवन में सबसे श्रेष्ठ दृष्टि वह है जिसमें हम सभी जीवों को मित्र मानकर देखते हैं। भारतीय परंपरा में “मित्र” देवता का उल्लेख बार-बार आता है। मित्र देवता सत्य, मैत्री और अनुशासन के प्रतीक हैं। इस मंत्र में “मित्र की दृष्टि” का अर्थ है — सत्य और स्नेह से युक्त दृष्टि। संक्षेप में, यह मंत्र कहता है कि सच्चा धर्म वही है जिसमें हम सभी प्राणियों को मित्रभाव से देखें। यही दृष्टि करुणा, अहिंसा और वैश्विक शांति का आधार है। **यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः**

संबभूवुः । यस्यमिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ॥ अथर्ववेद (१२.१.३) अर्थात् जिस पृथ्वी पर समुद्र, नदियाँ और अन्न उत्पन्न होते हैं, वही हमें जीवनदायिनी होकर पोषण प्रदान करे। यह श्लोक कहता है कि पृथ्वी जीवनदायिनी माता है, जो जल, अन्न और पोषण प्रदान करती है। उसका संरक्षण और सम्मान करना ही हमारा धर्म है। **या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत्सा नो भूमिर्गोष्वप्यत्रे दधातु ॥ अथर्ववेद (१२.१.४)**

अर्थात् जो पृथ्वी अनेक प्रकार के प्राणियों को जीवन देती है, वह हमें अन्न और पोषण प्रदान करे। यह श्लोक कहता है कि पृथ्वी माता है, जो अनेक प्रकार के प्राणियों को जीवन देती है और हमें अन्न व पोषण प्रदान करती है। उसका संरक्षण करना ही हमारा धर्म है।

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी। वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु ॥ अथर्ववेद (१२.१.६) अर्थात् पृथ्वी सबको धारण करने वाली, जगत की आधारशिला और अग्नि को धारण करने वाली है। वह हमें समृद्धि प्रदान करे। यह श्लोक कहता है कि पृथ्वी सम्पूर्ण जगत की आधारशिला है, जो जीवन, ऊर्जा और समृद्धि प्रदान करती है। उसका संरक्षण और सम्मान करना ही हमारा धर्म है।

उपनिषद् और गीता : अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ (महा उपनिषद् 6.71-73) अर्थात् संकीर्ण बुद्धि वाले लोग यह सोचते हैं कि "यह मेरा है, वह पराया है।" वे अपने और दूसरों के बीच भेद करते हैं। यह दृष्टि संकीर्णता और स्वार्थ से उत्पन्न होती है। उदार हृदय वाले, महान चरित्र वाले लोग सम्पूर्ण पृथ्वी को ही परिवार मानते हैं। उनके लिए कोई पराया नहीं होता, सब अपने ही होते हैं।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥ ईशावास्योपनिषद् (मंत्र १) अर्थात् इस जगत में जो कुछ भी है, वह ईश्वर से आवृत है। त्यागपूर्वक उसका उपभोग करो और किसी के धन पर लोभ मत करो।

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥ ईशावास्योपनिषद् (मंत्र ६) अर्थात् जो सभी प्राणियों को अपने आत्मा में और आत्मा को सभी प्राणियों में देखता है, वह किसी से द्वेष नहीं करता। यहाँ आत्मा और जगत की एकता का दर्शन है। जब व्यक्ति सभी प्राणियों को अपने आत्मा में देखता है, तो वह किसी से द्वेष नहीं करता। यही करुणा और अहिंसा का सर्वोच्च रूप है।

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥ भगवद्गीता (५.१८)

अर्थात् ज्ञानी व्यक्ति ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते और चांडाल में भी समानता देखता है। इस श्लोक में "समदर्शिता" का भाव है। ज्ञानी व्यक्ति ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते और चांडाल में भी समानता देखता है। यह दृष्टि करुणा और समानता का सर्वोच्च रूप है। जब व्यक्ति सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का दर्शन करता है, तो भेदभाव समाप्त हो जाता है।

महाकाव्य और नीति-ग्रंथ : श्रूयतां धर्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चैवावधार्यताम्। आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्॥ महाभारत (अनुशासन पर्व ११३) अर्थात् धर्म का सार यही है कि जो स्वयं को अप्रिय लगे, वैसा दूसरों के साथ मत करो। यह धर्म का सार है — जो आचरण स्वयं को अप्रिय लगे, वैसा दूसरों के साथ मत करो। यही नैतिकता का मूल सूत्र है।

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥ महाभारत (शान्ति पर्व) अर्थात् सभी लोक सुखी हों। यह वाक्यांश हमें यह स्मरण कराता है कि सच्चा धर्म और सच्ची साधना वही है जिसमें हम सभी प्राणियों के सुख और कल्याण की कामना करें।

अहिंसा परमो धर्मः धर्महिंसा तथैव च॥ महाभारत (शान्ति पर्व) यह श्लोक अहिंसा को सर्वोच्च धर्म बताता है। परंतु धर्म की रक्षा हेतु हिंसा भी धर्म है। इसका अर्थ है कि करुणा और अहिंसा का पालन करते हुए भी न्याय और धर्म की रक्षा आवश्यक है।

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः॥ हितोपदेश (मित्रलाभ, श्लोक 14)

अर्थात् दूसरों की स्त्रियों को माता, दूसरों के धन को मिट्टी और सभी को अपने समान देखना ही पण्डित का लक्षण है। यह श्लोक पण्डित का लक्षण बताता है — दूसरों की स्त्रियों को माता, दूसरों के धन को मिट्टी और सभी प्राणियों को अपने समान देखना। यही नैतिकता और धर्म का सार है।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्। मातृवत्परदारांश्च परद्रव्याणि लोष्ठवत्॥ पद्मपुराण (१.१९.३३६)

अर्थात् दूसरों के साथ वही व्यवहार करो जो स्वयं को प्रिय हो। यह श्लोक हमें तीन मूलभूत नैतिक शिक्षाएँ देता है: दूसरों के साथ वही व्यवहार करें जो आपके लिए हितकारी हो। पराई स्त्रियों को माता के समान सम्मान दें। पराई संपत्ति को तुच्छ समझें और उस पर लोभ न करें। इस प्रकार भारतीय दर्शन का सार "वसुधैव कुटुम्बकम्" है, जो समानता, करुणा, अहिंसा और सार्वभौमिक कल्याण की भावना को व्यक्त करता है। उपनिषद्, गीता और महाभारत में यह दृष्टि बार-बार मिलती है—दूसरों के साथ वही व्यवहार करो जो स्वयं को प्रिय हो। पृथ्वी को माता मानने की शिक्षा पर्यावरण संरक्षण का आधार है। आधुनिक संदर्भ में यह विचार युद्ध, महामारी, असमानता और जलवायु संकट जैसे वैश्विक चुनौतियों के समाधान और स्थायी शांति का मार्ग प्रस्तुत करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम्: आधुनिक संदर्भ में आवश्यकता : “वसुधैव कुटुम्बकम्” का दर्शन केवल प्राचीन भारतीय ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसकी आवश्यकता और प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। आधुनिक युग में यह विचार कई स्तरों पर महत्वपूर्ण है:

वैश्विक शांति और सहयोग : आज विश्व अनेक संघर्षों, युद्धों और आतंकवाद की चुनौतियों से जूझ रहा है। राष्ट्रों के बीच सीमाएँ और राजनीतिक हित अक्सर टकराव का कारण बनते हैं। ऐसे समय में “वसुधैव कुटुम्बकम्” का संदेश हमें यह सिखाता है कि सभी राष्ट्र एक ही परिवार के सदस्य हैं। यदि हम इस दृष्टि को अपनाएँ, तो अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सहयोग, संवाद और शांति स्थापित करना संभव होगा।

पर्यावरण संरक्षण : जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधनों का अंधाधुंध दोहन मानवता की बड़ी चुनौती है। अथर्ववेद में पृथ्वी को माता कहा गया है, जिससे संरक्षण और संतुलित उपयोग की प्रेरणा मिलती है। आधुनिक संदर्भ में यह दृष्टि पर्यावरणीय संकट का समाधान प्रस्तुत करती है और सतत जीवन की दिशा दिखाती है।

स्वास्थ्य और महामारी : कोविड-19 महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि कोई भी संकट केवल एक देश तक सीमित नहीं रहता। “सर्वे सन्तु निरामयाः” का भाव वैश्विक स्वास्थ्य संकट में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि हम सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानें, तो स्वास्थ्य सेवाओं, वैक्सीन वितरण और चिकित्सा सहयोग में समानता और न्याय सुनिश्चित किया जा सकता है।

मानवाधिकार और समानता : आज भी विश्व में जाति, रंग, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव मौजूद है। भगवद्गीता का श्लोक — “विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि...” — हमें यह सिखाता है कि ज्ञानी व्यक्ति सभी में समानता देखता है। आधुनिक समाज में यह दृष्टि मानवाधिकार और सामाजिक न्याय का आधार है।

तकनीकी युग और डिजिटल नेटवर्क : डिजिटल युग में विश्व एक वैश्विक नेटवर्क से जुड़ा है, जहाँ सीमाएँ मिट चुकी हैं। ऐसे समय में “वसुधैव कुटुम्बकम्” का भाव और भी प्रासंगिक है। यह हमें सिखाता है कि हमारी जिम्मेदारी केवल अपने देश तक सीमित नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता और विश्व परिवार के प्रति है।

भारत की विदेश नीति और वैश्विक मंच : भारत ने अपनी विदेश नीति में “वसुधैव कुटुम्बकम्” को प्रस्तुत कर विश्व शांति और सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया है। आधुनिक संदर्भ में यह दर्शन युद्ध, पर्यावरणीय संकट, महामारी और असमानता जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान है, जो करुणा, समानता और सहयोग से स्थायी शांति स्थापित करता है।

निष्कर्ष : भारतीय दर्शन का मूल भाव व्यापकता और समावेशिता है। “वसुधैव कुटुम्बकम्” केवल श्लोक नहीं, बल्कि जीवन दृष्टि है जो व्यक्ति, समाज और विश्व को जोड़ती है। उपनिषद, गीता और महाभारत समानता, करुणा और धर्मसार का संदेश देते हैं—दूसरों के साथ वही व्यवहार करो जो स्वयं को प्रिय हो। वेदों में पृथ्वी को माता और सभी जीवों को उसके पुत्र कहा गया है, जो पर्यावरण संरक्षण और संतुलित जीवन की प्रेरणा देता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह दर्शन महामारी, जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकार और तकनीकी चुनौतियों के समाधान का आधार है। भारत ने इसे विदेश नीति और वैश्विक सहयोग में भी प्रस्तुत किया है

सन्दर्भ सूची

अथर्ववेद। (तिथि अज्ञात)। काण्ड 12, सूक्त 1 (भूमि सूक्त)।

भगवद्गीता। (तिथि अज्ञात)। अध्याय 5, श्लोक 18।

ईशावास्योपनिषद्। (तिथि अज्ञात)। मंत्र 1 और 6।

महाभारत। (तिथि अज्ञात)। शान्ति पर्व एवं अनुशासन पर्व।

EduInspire-An International E-Journal

An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

महा उपनिषद्। (तिथि अज्ञात)। अध्याय VI, श्लोक 71-73।

पद्मपुराण। (तिथि अज्ञात)। 1.19.336।

ऋग्वेद। (तिथि अज्ञात)। मंडल 1, सूक्त 89, श्लोक 1; मंडल 10, सूक्त 191।

हितोपदेश। (तिथि अज्ञात)। मित्रलाभ, श्लोक 14।

यजुर्वेद। (तिथि अज्ञात)। अध्याय 36, श्लोक 18

